सूर के पद

नेताजी का चश्मा अपना - अपना भाग्य भीड़ में खोया आदमी दो कलाकार	मेघ आए सूर के पद ✓ भिक्षुक

सूर के पद

* कवि परिचय - वात्सल्य रस के सम्राट 'सूरदास' हिंदी साहित्य के कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे। सूरदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में भगवान कृष्ण के बाल और युवा रूप का अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण चित्रण किया है।

सूरदास की प्रमुख कृति 'सूरसागर' 'साहित्य लहरी' है आदि है। इनकी भाषा ब्रज है और इनकी रचनाएँ भक्तिकाल की सगुण भक्ति धारा के में आता है। इनकी काव्य शैली सरल, कोमल और हृदयस्पर्शी है। इनकी रचनाओं में वात्सल्य तथा शृंगार दो रसों का अधिक वर्णन है। उनका निधन 1583 ई. में हुआ। जन्म 1478 ई (रुनकता ग्

1) जसोदा हरि पालनै झुलावै.... जो सुख सूर अमर मुनि दुरलभ, सो नंद भामिनी पावै।

→ यहाँ सूरदास जी ने माता यशोदा के किस प्रयास का वर्णन किया है?

→ यहाँ सूरदास जी ने माता यशोदा के द्वारा कृष्ण को सुलाने के प्रयास का वर्णन किया है। माता यशोदा विभिन्न प्रयासों के माध्यम से श्रीकृष्ण को सुलाने के लिए कभी उनके पालने को झुलाती हैं, कभी थपथपाते लोरियाँ गाती हैं और उनके प्रति स्नेह भाव दिखाती हैं।

→ यहाँ कवि ने श्रीकृष्ण की किन-किन क्रियाओं का रोचक चित्र प्रस्तुत किया है

→ कवि ने श्रीकृष्ण की विभिन्न क्रियाओं का रोचक चित्र प्रस्तुत किया है, श्रीकृष्ण कभी अपनी आँखों को बंद कर ऐसा दर्शाते हैं कि मानो वे सो गए हैं, कभी अपने होंठ हिलाते कभी सोने का अभिनय करते हैं, तो दूसरे ही क्षण में जागे रहने का आभास कराते हैं।

→ सूरदास जी ने किस सुख की चर्चा की है तथा उस अनुभव की प्राप्ति किसे हो रही है?

→ प्रस्तुत पद में कवि सूरदास जी ने वात्सल्य सुख की चर्चा की है ~~तथा~~ उस श्रीकृष्ण को सुलाते हुए माता यशोदा को बाल कृष्ण के विविध क्रिया-कलापों को देखकर जो सुख प्राप्त हो रहा है, ~~उसे सूरदास जी~~ वह सुख ने देवताओं-मुनियों के लिए भी यह ~~सुख~~ दुर्लभ बताया गया है। यह परम वात्सल्य सुख ~~केवल~~ का अनुभव माता यशोदा को रहा है

(2) खीजत जात माखन खात - सूर हरि की निरखि सोभा, निमिख तजत न माता (2023)

→ प्रस्तुत पद में कवि ने कृष्ण के किस रूप का चित्रण किया है तथा झल्लाहट का क्या कारण है।

→ प्रस्तुत पद में सूरदास जी ने कृष्ण के बाल रूप का चित्रण किया है। उनकी झल्लाहट का कारण यह है कि उनको बहुत तेज़ नींद आ रही थी इसलिए वह चिढ़ते हुए और मचलते हुए माखन खा रहे हैं और झल्ला रहे हैं।

→ झल्लाहट में क्या-क्या कर रहे थे

कृष्ण झल्लाहट में कभी घुटनों के बल चलते हैं, जिससे उनके पैरों की पैंजनी के घुंघरू झन-झन करते हुए बजने लगते हैं। कभी वे गुस्से से अपने ही बाल खींचने लगते हैं। कभी वे चिढ़कर तोतली भाषा में कुछ बोलते हैं तो कभी माता यशोदा से ... के लिए अपने पिता को बुलाते हैं

3) मैया मेरी, चंद्र खिलौना लैहौं (2019)

→ कौन माता से जिद कर रहा है और क्या प्राप्त करना चाहता है?

→ प्रस्तुत पद्य में बाल श्रीकृष्ण अपनी माता यशोदा से जिद कर रहे हैं। वे चंद्रमा रूपी खिलौने को प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात आकाश में चमकते हुए को खिलौना समझकर माता यशोदा से उसे लेने की जिद कर रहे हैं।

→ उनकी माता कौन है? अपने पुत्र को देखकर कैसा अनुभव कर रही है (स्पष्ट करें)

→ उनकी माता (नंद की पत्नी) यशोदा हैं। वे पुत्र अपने पुत्र को देखकर अत्यंत आनंद का अनुभव कर रही हैं उनकी बातें माता यशोदा में हर्ष का संचार कर रही हैं जिसके कारण वे प्रसन्न हो रही है, वात्सल्य सुख को प्राप्त कर रही है।

→ अपनी माँ को क्या धमकियाँ दे रहे हैं?

खिलौना न मिलने की स्थिति में बाल कृष्ण अपनी माँ को धमकियाँ दे रहे हैं कि यदि तुमने मुझे खिलौना नहीं दिलाया तो न तो मैं कुछ खाऊंगा नहीं चोटी गाय का दूध पीऊंगा, न अपने बाल बँधवाऊंगा, न मोतियों की माला धारण करूंगा। मैं धरती पर जाकर लेट जाऊंगा और केवल नंद बाबा का पुत्र कहलाऊंगा माता यशोदा का नहीं।

→ बालक को मनाने के लिए माँ क्या कहती है। बालक पर उसका क्या प्रभाव पड़ा? सूरदास की भक्ति भावना का परिचय देते हुए समझाए

→ रूठे हुए बालक को बहलाने के लिए माँ कहती है कि मैं तुम्हें एक बात बताती हूँ किंतु बलराम से मत कहना, मैं तेरा विवाह चंद्रमा से भी सुंदर दुल्हन से करवाऊंगी। बालक पर इस इस बात का यह प्रभाव पड़ा कि वे ~~अत्यंत~~ अत्यंत खुश हो जाते हैं तथा उसी समय विवाह करने की बात कहते हैं।

✱ सूर की भक्ति भावना वात्सल्य और माधुर्य भाव से युक्त है उनकी भक्ति कृष्ण के लीलागान है के रूप में उभरकर सामने

(4) कौन जाय कछु कहत .... नूतन मंगल गैहौं।

→ बालक की जिद पर माता क्या कर रही है?

→ बाल श्रीकृष्णा की जिद पर माता यशोदा उन्हें तरह-तरह से समझाने का प्रयास कर रही हैं, लेकिन बालकृष्णा मान नहीं रहे हैं। माता रूठे हुए कृष्णा को बहुत से लालच दे रही हैं, लेकिन वे उनकी बातों में नहीं आते।

→ सूरदास सब सखा बराती, नूतन मंगल गैहौं स्पष्ट करें।

→ बाल कृष्णा माता की बात सुनकर अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं और माता से तुरंत शादी कराने जाने को कहते हैं। । सूरदास सब सखा बराती पंक्ति में कहते हैं कि बाल कृष्णा कहते हैं कि मेरे सभी सखा बराती बनकर मंगल गीत गाएँगे।

→ सूरदास ने कृष्णा के किस रूप का वर्णन किया है। काव्य की क्या विशेषताएँ हैं।

→ प्रस्तुत पद में सूरदास जी ने श्रीकृष्णा के बाल स्वरूप का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। सूरदास की भाषा ब्रजभाषा है। इनके काव्य में श्रृंगार व वात्सल्य रस का वर्णन देखने को मिलता है, इन्होंने अपने पदों में श्रृंगार के संयोग-वियोग दोनों रूप का वर्णन किया है। इनके काव्य में कृष्णा के प्रति भक्ति भाव का वर्णन मिलता है यहि काव्य की विशेषताएँ हैं।

→ 'अबही ब्याहन जैहौं' इसमें कृष्णा की कौन-सी कल्पना झलकती है तथा पंक्ति में कृष्णा के किस पक्ष को उभारा गया है।

→ प्रस्तुत पंक्ति में बालकृष्णा की बाल सुलभ कल्पना और नटखट स्वभाव झलकता है। वह बाल्यावस्था में विवाह जैसी परिपक्व धारणा को भी बालपन के दृष्टिकोण से देख रहे हैं।

यहाँ कृष्णा के बाल सुलभ चंचलता और भोलेपन को उभारा गया है, जो विवाह को एक खेल की तरह देखता है।